2 नवम्बर 2016, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के
व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 39, अंक : 14+15 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अक्टू.II-नवम्बर-I (संयुक्तांक),2016 (वीर नि.सं.-2542) सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखरजी में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की स्वर्ण जयंती महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत आयोजित -

श्री समयसार विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर अत्यंत धूमधाम से संपन्न

- श्री समयसार महामंडल विधान का भव्य आयोजन
- डॉ.भारिल्ल, ब्र.सुमतप्रकाशजी आदि अनेक विद्वानों के प्रवचन
- इतिहास का सबसे बड़ा 1000 विद्वानों का महासम्मेलन
- अ.भा.दिग. जैन विद्वत्परिषद् का राष्ट्रीय अधिवेशन
- पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद् का सम्मेलन
- देश-विदेश से 1008 इन्द्र-इन्द्राणी विधान में सम्मिलित
- अ.भा.जैन युवा फैडरेशन का राष्ट्रीय अधिवेशन
- पृथ्वी थियेटर, मुंबई द्वारा वैराग्य महाकाव्य पर नाट्य प्रस्तुति
- टोडरमल से टोडरमल स्मारक तक नामक नाट्य प्रस्तुति
- टोडरमल स्मारक पर आधारित फीचर फिल्म का प्रदर्शन
- गौरव सौगानी जयपुर द्वारा आध्यात्मिक भजन संध्या
- विशिष्ट महानुभावों एवं सभी मुमुक्षु संस्थाओं का सम्मान
- पर्वतराज श्री सम्मेदशिखर की सामूहिक वंदना
- अध्यात्म की गंगा में किया 10,500 साधर्मियों ने स्नान

सम्मेदशिखरजी (झारखंड) : यहाँ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की स्वर्ण जयंती के अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रचित श्री समयसार विधान 1008 इन्द्र-इन्द्राणियों द्वारा रविवार, दिनांक 9 अक्टूबर से शुक्रवार, दिनांक 14 अक्टूबर, 2016 तक टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के 18वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित अत्यंत धूमधाम से संपन्न हुआ।

दिनांक 9 अक्टूबर को भव्य जिनेन्द्र रथयात्रा के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। सभा स्थल पर श्रीजी के अभिषेक के उपरांत मंडप व मंच उद्घाटन हुआ। शिविर उद्घाटन के बाद उद्घाटन सभा प्रारम्भ हुई। दोपहर को श्री समयसार महामंडल विधान का उद्घाटन हुआ एवं कलश स्थापना हुई, जिसमें 1008 इन्द्र-इन्द्राणियों ने सम्मिलित हुये।

शिविर में प्रतिदिन प्रात:काल गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन के अतिरिक्त डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल आदि अनेक विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रिकालीन प्रवचनों में प्रतिदिन ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना आदि अनेक विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रात:कालीन प्रौढ कक्षा, जिनेन्द्र पूजन के पश्चात् जिनवाणी चैनल पर डॉ. भारिल्ल और अरहंत चैनल पर पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रवचन, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं तीनों समय बालकक्षाओं का आयोजन हुआ।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत दिनांक 9 अक्टूबर को श्री टोडरमल महाविद्यालय के छात्रों द्वारा टोडरमल से टोडरमल स्मारक तक नामक नाटक, दिनांक 10 अक्टूबर को विख्यात गायक डॉ. गौरव जैन सौगानी एवं दीपशिखा जैन, जयपुर द्वारा आध्यात्मिक भजन संध्या, दिनांक 11 अक्टूबर को टोडरमल स्मारक भवन पर आधारित फीचर फिल्म, दिनांक 12 अक्टूबर को पृथ्वी थियेटर, मुम्बई के कलाकारों द्वारा वैराग्य महाकाव्य पर नाट्य प्रस्तुति हुई।

इसके अतिरिक्त पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद का सम्मेलन, अ.भा.जैन युवा फैडरेशन का राष्ट्रीय अधिवेशन, अ.भा. दि.जैन विद्वत्परिषद् का सम्मेलन, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के उन्नयन में अपना विशिष्ट योगदान देने वाले कुछ प्रमुख महानुभावों एवं संस्थाओं का सम्मान समारोह आदि कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।

इस संपूर्ण आयोजन में देशभर से पधारे 10 हजार 500 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। ●

(इस अंक में शिविर के समाचार संक्षेप में प्रकाशित किये जा रहे हैं, अगले अंक में विस्तृत रूप से प्रकाशित किये जायेंगे)

सम्पादकीय –

संस्कारों का महत्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

रवीन्द्रनाथ टैगोर के विदेशों में हुए सम्मान से प्रभावित हो जब भारतीय विश्वविद्यालय ने उन्हें 'डॉक्टरेट' की उपाधि से सम्मानित करने का आमंत्रण दिया तो उन्होंने 'टू मच लेट' कहकर उनके सम्मान को अस्वीकार कर दिया था।

ऐसा करके उन्होंने कोई नाराजगी प्रगट नहीं की थी, बल्कि वे उन्हें यह सिखाना चाहते थे कि –'भरे पेट में अमृत पान कराने के बजाय भूखे पेट को समय पर दो रोटियाँ देना बेहतर है।'

इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखकर आचार्यश्री ने विज्ञान को ठीक समय पर प्रोत्साहित किया था। प्रोत्साहन पाकर विज्ञान ने एक दिन साहस बटोरते हुए शंका-समाधान के समय णमोकार मंत्र की कथाओं से संबंधित चर्चा को पुन: उठाते हुए निवेदन किया कि –'महाराज ! णमोकार महामंत्र संबंधी पुराणों में आई कथाओं के संदर्भ में मेरा सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि 'दृढसूर्य' चोर ने दुस्सह दु:ख भोगते हुए जल की आशा से णमोकार मंत्र का उच्चारण किया, फिर भी वह उस मंत्र के प्रभाव से देवपर्याय को प्राप्त हुआ, सो ऐसा कैसे संभव है ? क्या संक्लेश भावों के साथ तथा लौकिक कामना से किये गये णमोकार मंत्र का उच्चारण का फल स्वर्ग की प्राप्ति हो सकता है ?''

आचार्यश्री विज्ञान के तार्किक चिन्तन और गहन अध्ययन की पुन: प्रशंसा करते हुए बोले –''स्वाध्याय तो कहते ही उसे हैं जिसमें विचार मंथन हो। जिस तरह दही को विधिवत बिलोए बिना मक्खन हाथ नहीं आता, उसी प्रकार वस्तुस्वरूप का स्याद्वाद शैली से विधिवत मन्थन किए बिना तत्त्व हाथ नहीं आता।''

यद्यपि शंका-समाधान का समय समाप्त हो चुका था, फिर भी उपर्युक्त शंका का समाधान सुनने को सभी श्रोता उत्सुक थे, परन्तु समयाभाव के कारण उस दिन समाधान करना संभव नहीं था।

श्रोता भी यही सोच रहे थे कि महाराज समय के पाबन्द हैं, अत: अब कल तक तो प्रतीक्षा करनी ही पड़ेगी। उधर उस रात आचार्यश्री के चिन्तन का विषय भी केवल विज्ञान की तत्त्वचर्चा ही बनी रही। उसके आगम पर आधारित एवं युक्तिसंगत प्रश्नों ने महाराजश्री को समाधान करने के लिए विवश तो किया ही, उसकी पैनी पकड़ ने उन्हें प्रभावित भी किया। इसकारण उनका अगले दिन का प्रवचन भी विज्ञान द्वारा प्रस्तुत की गई शंकाओं के इर्द-गिर्द ही घूमता रहा।

दृढसूर्य चोर की कथा से संबंधित विज्ञान की शंका का विश्लेषण करते हुए आचार्यश्री ने कहा –''यह कोई नियम तो है नहीं कि जिन-जिन को बाह्य में दारुण दु:ख होता दिखाई दे, उन सबके परिणाम भी संक्लेश रूप ही हों, विशुद्ध भी तो हो सकते हैं। सम्यग्दृष्टि नारकी जीवों को ही देखो न ? नरकों में बाह्य संयोगों की कैसी प्रतिकूलता है ? निरन्तर अनन्त दु:ख, एक क्षण को भी चैन नहीं; फिर भी सम्यग्दृष्टि जीव समता रस का ही पान किया करते हैं।

इस संबंध में कविवर दौलतरामजी की वे पंक्तियाँ स्मरणीय हैं, जिनमें उन्होंने सम्यग्दृष्टि की प्रतिकूल परिस्थितियों में समताभाव से रहने का चित्रण किया है। वे कहते हैं –

चिन्मूरत दृग धारिन की मोहि, रीति लगत कछु अटापटी।
बाहर नारकिकृत दु:ख भोगें, अन्तर समरस गटागटी।।

इसप्रकार दारुण दु:ख में भी विशुद्ध परिणाम रह सकते हैं। इसका दूसरा ज्वलन्त प्रमाण हमारे सामने पाँच पाण्डवों का है। यदि बाहर के दारुण दु:ख देखकर उनके अन्तरंग परिणामों को संक्लेशरूप ठहराया जाएगा, तब तो फिर उनमें से तीन को मोक्ष प्राप्त होना और दो का सर्वार्थसिद्धि में जाने की बात ही विवाद में पड़ जायेगी, जो निर्विवाद रूप से सर्वज्ञ देव द्वारा कथित आगम सिद्ध तथ्य है।

देवपर्याय की प्राप्ति भी बिना विशुद्ध परिणामों के संभव नहीं है, अत: दृढसूर्य चोर के परिणाम णमोकार मंत्र का निमित्त पाकर अपनी तत्समय की योग्यता से नियम से विशुद्ध हुए थे, अन्यथा उसे देवगति में जाना कैसे संभव है ?

उक्त कथा में भी इतना ही तो लिखा है कि दुस्सह दु:ख भोगते हुए भी उसने णमोकार मंत्र के पढने से देवगति प्राप्त की। यह कहाँ लिखा कि संक्लेश परिणाम करते हुए भी स्वर्ग गया ?''

अपने प्रवचन के विषय को आगे बढाते हुए मुनिश्री ने विज्ञान को ही लक्ष्य करके कहा –''विज्ञान ! तुम्हारी दूसरी शंका यह है कि पानी पीने की कामना से णमोकार मंत्र का जाप करनेवाले को स्वर्ग की प्राप्ति कैसे हो सकती है ?

यह शंका भी अपनी जगह बिलकुल सही है, पानी ही क्या ? किसी भी लौकिक कामना से की गई पंचपरमेष्ठी की उपासना

तीव्रकषाय होने से पापभावरूप ही है। फिर भी दृढसूर्य चोर को जो स्वर्ग की प्राप्ति होने का उल्लेख पुराणों में है उस संदर्भ में यह विचारणीय है कि -'क्या ऐसा नहीं हो सकता कि णमोकार मंत्र के उच्चारण करने से दृढसूर्य चोर का ध्यान प्यास जनित पीड़ा या दारुण दु:ख से हटकर पंचपरमेष्ठी के स्वरूप पर चला गया हो और भली होनहार के कारण उसे अपने चौरकृत्य पर पश्चाताप के साथ णमोकार मंत्र की आराधना के फलस्वरूप विशुद्ध परिणाम हो गये हों, जिनका फल साक्षात् स्वर्ग ही है।

उसकी अंतरंग परिणति विशुद्ध हो जाने पर भी बाह्य दृष्टि से देखनेवालों ने तो यही देखा होगा अथवा उन्हें तो यही दिखाई दिया होगा कि वह बेचारा प्यास से तड़प रहा है, होंठ सूख रहे हैं, होठों पर जीभ फेर रहा है, साथ ही णमोकार मंत्र पढ रहा है।' यह दृश्य देखकर तो यही कहा जायेगा या अनुमान लगाया जायेगा कि उसने जरूर पानी के लिए ही णमोकार मंत्र पढा होगा।

कविवर बनारसीदास के साथ भी तो ऐसा ही घटित हुआ था। जब मरणतुल्य वेदना के बाद भी उनके प्राण नहीं निकले तो लोगों ने यह कहना प्रारम्भ कर दिया कि -'पता नहीं बेचारे के प्राण कहाँ मोह-ममता में अटक रहे हैं ? किन्तु जब लोगों की यह चर्चा उनके कान में पड़ी तो उन्हें यह लिखकर बताना पड़ा कि अरे भाई ! ऐसी बात नहीं है। मैंने तो ज्ञानरूपी फरसे से अपने मोह-राग-द्वेष आदि सभी कर्म-शत्रुओं को मार दिया है। अब मैं इस संसार से सदा के लिए जा रहा हूँ, मुझे अब यहाँ पुन: लौटकर नहीं आना है।

देखिए उन्हीं के शब्दों में - अर्द्धकथानक में वे लिखते हैं -

'ज्ञान कुतक्का हाथ, मारि अरि मोहना।
प्रगट्यो रूप स्वरूप, अनन्त सु सोहना।।
जा परजै को अन्त, सत्य कर मानना।
चले बनारसीदास फेर नहीं आवना।।'

अत: दृढसूर्य का बाहरी दारुण दु:ख देखकर यह शंका करना उचित नहीं है कि उसने पानी की कामना से ही णमोकार मंत्र जपा था, फिर भी स्वर्ग की प्राप्ति हो गई। यदि पानी की कामना से मंत्र का जाप किया होता तो नियम से स्वर्ग की प्राप्ति नहीं होती।

तुम्हारी मान्यतानुसार अर्थ करने से अनर्थ यह होगा कि लोग लौकिक कामना से ही धर्मकार्य करने लगेंगे, तब फिर तो निष्कामभक्ति की भावनायें समाप्त ही हो जायेंगी।

यदि कदाचित् कहीं ऐसा स्पष्ट लिखा भी मिल जाय तो प्रयोजन एवं प्रसंग को दृष्टि में रखकर नयार्थ व मतार्थ से ही उसका समाधान करना होगा।''

इसप्रकार मुनिश्री ने विज्ञान की शंकाओं का जो समाधान किया, उससे विज्ञान तो संतुष्ट हो ही गया, अन्य श्रोता भी गद्गद् हो गये। सभी मुनिश्री की जय बोलते हुए अपने-अपने घर चले गये।

''क्या दिगम्बर और क्या श्वेताम्बर, सम्पूर्ण जैन समाज एकमत से णमोकार महामंत्र को अपना आदर्श मंत्र मानती है और सभी मंत्रों में इसको सर्वश्रेष्ठ महामंत्र निरूपित करती है; क्योंकि इस महामंत्र में उन अरहंत सिद्ध आदि वीतरागी पंचपरमेष्ठी को नमन किया गया है, जो सबको समान रूप से मान्य एवं सभी को परम-पूज्य और आराध्य हैं।

क्या गृहस्थ और क्या साधु-मुनि - सभी इन्हें निर्विवाद रूप से एक जैसा ही मानते-पूजते हैं।

इसकारण सभी सम्प्रदायों में इस महामंत्र की महिमावाचक अनेक पौराणिक कथायें, उपकथायें तो थीं ही साथ ही समय-समय पर घटित घटनाओं के आधार पर लोक प्रचलित किंवदन्तियाँ एवं भट्टारकयुगीन कल्पित कथाओं की भी भरमार रही।

यहाँ तक तो कोई बात नहीं थी; पर कहीं-कहीं या तो साहित्यिक दृष्टि से अतिशयोक्ति, अन्योक्ति आदि अलंकारों के प्रयोगों से या फिर अनुयोग पद्धति के प्रयोजनवश अथवा किंवदन्तियों से प्रभावित होकर इन कथाओं में बढा-चढा कर भी बहुत कथन किए गए हैं। जिनके सही अभिप्राय और यथार्थ स्थिति को न समझ पाने से उनके सम्बन्ध में लोगों को भ्रान्तियाँ भी बहुत हुई हैं।''

आचार्यश्री आज भी रातभर इन्हीं सब बातों पर विचार मंथन करते रहे; क्योंकि दो दिन से प्रवचनों के उपरांत पूछे जाने वाले प्रश्नों में इसी से सम्बन्धित प्रश्न अधिक आ रहे थे। आचार्यश्री ने आगम के आलोक में काफी मंथन किया था। अत: उन्होंने सोचा -''क्यों न आज अनुयोग पद्धति को ही समझा दिया जाय ?''

यह सोचकर प्रवचन प्रारम्भ करते हुए उन्होंने कहा -''देखो सम्पूर्ण जिनागम को चार शैलियों में प्रतिपादित किया गया है, जिन्हें चार अनुयोग कहा जाता है। वे हैं द्रव्यानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग और प्रथमानुयोग। सम्पूर्ण पौराणिक कथानक प्रथमानुयोग की शैली में लिखे गये हैं। प्रथमानुयोग में कभी-कभी प्रयोजनवश चाँटे का काम काँटे से भी निकाला जाता है।''

मुनिराजश्री अपनी बात स्पष्ट कर ही रहे थे कि विज्ञान बीच में ही बोल पड़ा -''महाराज ! चाँटे का काम काँटे से कैसे निकल सकता है ? चाँटा चाँटा है और काँटा-काँटा है।'' **(क्रमश:)**

दिन का चौघड़िया

वार	रवि	सोम	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
प्रथम	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
द्वितीय	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
तृतीय	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
चतुर्थ	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
पंचम	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
षष्ठ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
सप्तम	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
अष्टम	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

जैनपथप्रदर्शक : जैनतिथिदर्पण

श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर-३०२०१५

१ जनवरी, २०१७ से ३१ दिसम्बर, २०१७ तक

श्री वीर निर्वाण सं. २५४३-२५४४ : विक्रम सं. २०७३-७४

रात का चौघड़िया

वार	रवि	सोम	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
प्रथम	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
द्वितीय	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
तृतीय	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
चतुर्थ	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
पंचम	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
षष्ठ	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
सप्तम	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
अष्टम	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

पक्ष → / तिथि ↓	पौष १ जनवरी से १२ जनवरी				माघ १३ जनवरी से १० फरवरी				फाल्गुन ११ फरवरी से १२ मार्च				चैत्र १३ मार्च से ११ अप्रैल				वैशाख १२ अप्रैल से १० मई				ज्येष्ठ ११ मई से ९ जून				आषाढ़ १० जून से ९ जुलाई				श्रावण १० जुलाई से ७ अगस्त				भाद्रपद ८ अगस्त से ६ सितम्बर				आश्विन ७ सितम्बर से ५ अक्टूबर				कार्तिक ६ अक्टूबर से ४ नवम्बर				मार्गशीर्ष ५ नवम्बर से ३ दिसम्बर				पौष ४ दिस. से ३१ दिसम्बर			
			शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल	
	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार
प्रतिपदा					१३	शु	२८	श	११	श	२७	सो	१३	सो	२८	मं	१२	बु	२७	गु	११	गु	२६	शु	१०	श	२४	श	१०*	सो	२४	सो	८*	मं	२२	मं	७	गु	२१	गु	६	शु	२०	शु	५×	र	१९	र	४	सो	१९	मं
द्वितीया					१४	श	२९	र	१२	र	२८	मं	१४	मं	२९	बु	१३	गु	२८*	शु	१२	शु	२७	श	११	र	२५	र	११	मं	२५	मं	९	बु	२३	बु	८	शु	२२	शु	७	श	२१	श	५	र	२०	सो	५	मं	२०	बु
तृतीया			जन.2017		१५	र	३०	सो	१३	सो	मार्च		१५	बु	३०	गु	१४	शु	२९×	श	१३ १४	श र	२८	र	१२	सो	२६	सो	१२	बु	२६×	बु	१०	गु	२४	गु	९	श	२३	श	८	र	२२	र	६	सो	२१	मं	६	बु	२१	गु
चतुर्थी			२	सो	१६	सो	३१	मं	१४	मं	२	गु	१६	गु	३१	शु	१५	श	२९*	श	१५	सो	२९	सो	१३	मं	२७	मं	१३	गु	२६	बु	११	शु	२५	शु	१०×	र	२४	र	९	सो	२३	सो	७	मं	२२	बु	७×	गु	२२	शु
पंचमी			३	मं	१७	मं	फरवरी १	बु	१५	बु	३	शु	१७	शु	१	श	अप्रैल १६	र	३०	र	१६	मं	३०*	मं	१४	बु	२८	बु	१४	शु	२७	गु	१२	श	२६*	श	१०	र	२५	सो	१०	मं	२४	मं	८	बु	२३	गु	७	गु	२३	श
षष्ठी			४	बु	१८	बु	२	गु	१६	गु	४×	श	१८	श	२	र	१७	सो	मई १	सो	१७	बु	३१×	बु	१५	गु	२९	गु	१५	श	२८	शु	१३	र	२७	र	११	सो	२६	मं	११×	बु	२५ २६	बु गु	९	गु	२४	शु	८	शु	२४	र
सप्तमी			५	गु	१९	गु	३	शु	१७ १८	शु श	४	श	१९	र	३	सो	१८	मं	२	मं	१८	गु	३१	बु	१६	शु	३०	शु	१६	र	२९*	श	१४	सो	२८	सो	१२	मं	२७	बु	११	बु	२७	शु	१०*	शु	२५ २६	श र	९	श	२५	सो
अष्टमी			६	शु	२०	शु	४	श	१९	र	५*	र	२०	सो	४	मं	१९	बु	३	बु	१९	शु	जून १	गु	१७	श	जुलाई १*	श	१७	सो	३० ३१	र सो	१५	मं	२९	मं	१३	बु	२८	गु	१२	गु	२८*	श	११	श	२७	सो	१०	र	२६	मं
नवमी			७	श	२१	श	५	र	२०	सो	६	सो	२१* २२	मं बु	५	बु	२०	गु	४	गु	२०	श	२	शु	१८	र	२	र	१८	मं	अगस्त १	मं	१६	बु	३०*	बु	१४	गु	२९	शु	१३	शु	२९	र	१२	र	२८	मं	११	सो	२७	बु
दशमी			८×	र	२२	र	६	सो	२१	मं	७	मं	२३	गु	६	गु	२१	शु	५	शु	२१	र	३	श	१९	सो	३	सो	१९×	बु	२	बु	१७	गु	३१*	गु	१५	शु	३०	श	१४	श	३०	सो	१३	सो	२९	बु	१२	मं	२८	गु
एकादशी			८	र	२३	सो	७*	मं	२२	बु	८	बु	२४	शु	७	शु	२२	श	६	श	२२	सो	४ ५	र सो	२०	मं	४	मं	१९	बु	३	गु	१८	शु	सितम्बर १ २	शु श	१६	श	अक्टूबर १	र	१५	र	३१	मं	१४	मं	३०×	गु	१३	बु	२९	शु
द्वादशी			९	सो	२४	मं	८	बु	२३	गु	९	गु	२५	श	८	श	२३	र	७	र	२३	मं	६	मं	२१	बु	५	बु	२०	गु	४	शु	१९×	श	३	र	१७	र	२	सो	१६	सो	नवम्बर १	बु	१५	बु	३०	गु	१४	गु	३०	श
त्रयोदशी			१०	मं	२५	बु	९×	गु	२४	शु	१०	शु	२६	र	९*	र	२४	सो	८	सो	२४×	बु	७	बु	२२	गु	६	गु	२१	शु	५	श	१९	श	४*	सो	१८	सो	३	मं	१७	मं	२	गु	१६	गु	दिसम्बर १	शु	१५	शु	३१	र
चतुर्दशी			११	बु	२६*	गु	९	गु	२५	श	११	श	२७×	सो	१०	सो	२५	मं	९	मं	२४	बु	८	गु	२३	शु	७	शु	२२	श	६	र	२०	र	५*	मं	१९	मं	४	बु	१८	बु	३	शु	१७	शु	२	श	१६	श		
पूर्णिमा/अमा.			१२	गु	२७	शु	१०	शु	२६	र	१२*	र	२७	सो	११	मं	२६	बु	१०	बु	२५	गु	९	शु	२४×	श	८* ९	श र	२३	र	७*	सो	२१	सो	६*	बु	२०	बु	५	गु	१९*	गु	४*	श	१८	श	३	र	१७ १८	र सो		

जैन व्रत एवं पर्व :

ऋषभदेव निर्वाण दिवस – २६ जनवरी, २०१७
कविवर बनारसीदास जयन्ती – ७ फरवरी, २०१७
श्री ऋषभदेव जयन्ती – २१ मार्च, २०१७
अष्टान्हिका : (१) ५ मार्च से १२ मार्च, २०१७
(२) १ जुलाई से ८ जुलाई, २०१७
(३) २८ अक्टूबर से ४ नवम्बर, २०१७

श्री महावीर भगवान जयन्ती – ९ अप्रैल, २०१७
श्री कानजीस्वामी जयन्ती – २८ अप्रैल, २०१७
अक्षय तृतीया – २९ अप्रैल, २०१७
श्रुत पंचमी – ३० मई, २०१७
वीर शासन जयन्ती – १० जुलाई, २०१७
मो. सप्तमी (पार्श्व. निर्वाण) – २९ जुलाई, २०१७

रक्षा बन्धन – ७ अगस्त, २०१७
सोलहकारण व्रत – ८ अगस्त से ६ सितम्बर, २०१७
दशलक्षण व्रत – २६ अगस्त से ५ सितम्बर, २०१७
पुष्पांजलि व्रत – २६ अगस्त से ३० अगस्त, २०१७
सुगन्ध दशमी – ३१ अगस्त, २०१७
रत्नत्रय व्रत – ४ सितम्बर से ६ सितम्बर, २०१७

अनन्त चतुर्दशी – ५ सितम्बर, २०१७
श्री भगवान महावीर निर्वाणोत्सव (दीपावली) – १९ अक्टूबर, २०१७
श्री कानजीस्वामी स्मृति दिवस – १० नवम्बर, २०१७
जयपुर पंचकल्याणक वार्षिकोत्सव – २४ से २६ फरवरी, २०१७

× तिथि क्षय *जैनव्रत एवं पर्व

शिक्षण प्रशिक्षण शिविर – १५ मई से १ जून, २०१७ तक, बोरीवली-मुम्बई
महाविद्यालय शिविर – २३ जुलाई से १ अगस्त, २०१७ तक, जयपुर
शिक्षण शिविर – २४ सितम्बर से ३ अक्टूबर, २०१७ तक, जयपुर

प्रकाशचन्द जैन 'ज्योतिर्विद' मो. ९३५९९२३७७५
७३, लोहाई, मैनपुरी (उ.प्र.) के सौजन्य से, फोन : ०५६७२-२३४२२७

स्वर्ण जयंती के मायने (13)

स्वर्ण जयंती महोत्सव के अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा तीर्थराज सम्मेदशिखर में आयोजित डॉ. हुकमचंद भारिल्ल द्वारा रचित श्री समयसार विधान

एक ऐतिहासिक व अविस्मरणीय आयोजन

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

यह तो पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के तीव्र प्रभावना उदय एवं डॉ. हुकमचंद भारिल्ल के महान चुम्बकीय व्यक्तित्व के आकर्षण का परिणाम ही है कि पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के एक आह्वान मात्र से उस वनखण्ड में स्थित तीर्थराज सम्मेदशिखर की पवित्र धरा पर धर्मप्रेमी, आत्मार्थी भाई-बहिनों का विशाल हुजूम उमड़ पड़ा।

होने को तो यह एक विधान मात्र था; पर इसने देश में होने वाले विशाल भव्यतम पंचकल्याणकों को भी पीछे छोड़ दिया।

प्रचलित पद्धति के अनुसार जिसे लाखों लोगों का समुदाय कहा जा सकता है, ऐसे रजिस्टर्ड लगभग 11 हजार स्वत: अनुशासित लोगों की शांतिपूर्ण, गरिमामय उपस्थिति ने सचमुच इस कार्यक्रम को एक ऐतिहासिक महत्व प्रदान किया है।

विगत 9 अक्टूबर से 14 अक्टूबर 2016 तक सम्पन्न डॉ. हुकमचंद भारिल्ल द्वारा रचित इस समयसार विधान का आयोजन अनेक मायनों में ऐतिहासिक व अविस्मरणीय रहा, जिसने जैन समाज में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों के बीच अपना एक विशिष्ट स्थान बनाया है, अनेकों नवीन कीर्तिमान स्थापित किये हैं।

सैंकड़ों लोगों को कहते हुए सुना गया कि (श्री टोडरमल स्मारक भवन की प्रतिकृति के रूप में निर्मित) ऐसा भव्य और इतना विशाल पांडाल किसी आध्यात्मिक या सामाजिक कार्यक्रम में अब तक देखने को नहीं मिला है।

इस कार्यक्रम के माध्यम से आज सारे विश्व ने जाना कि वह समयसार जिसे मात्र साधुओं के पढने योग्य माना जाता था, सामान्यजन तो क्या समाज के मूर्धन्य विद्वान भी जिससे अनभिज्ञ थे, इस कलिकाल में जिसके मर्म का उद्घाटन पू. गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने किया, आज किस तरह से जन-जन के पठन-पाठन की वस्तु बन गया है। आज यह संभव है कि संपूर्ण समयसार का अर्थसहित पारायण मात्र पांच दिन में हो सके और देश-विदेश के जैन समाज का जन-जन किस प्रकार उक्त समयसार के माध्यम से भगवान आत्मा का स्वरूप समझकर मन्त्रमुग्ध है।

यह तो एक निर्विवाद तथ्य है ही कि इस काल में समयसार का उद्घाटन एवं लगातार 45-45 वर्षों तक दिन में तीन बार अपने प्रवचनों व चर्चा के माध्यम से उसका प्रचार-प्रसार कर पूज्य गुरुदेवश्री ने भव्यजीवों पर असीम उपकार किया है, तो इस बात में भी कोई संदेह नहीं कि आज उस समयसार को देश-विदेश के सभी जैन घरों तक पहुंचाने और उसे जन-जन की वस्तु बनाने का श्रेय एकमात्र डॉ. हुकमचंद भारिल्ल और उन्हीं के द्वारा निर्देशित एवं संचालित पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को जाता है। समयसार, नियमसार, प्रवचनसार आदि परमागमों का वृहद्, विशद व गहन अनुशीलन, उनका प्रकाशन और वितरण करना, उन पर सरल भाषा में गूढ गंभीर प्रवचन करना और उन प्रवचनों को टीवी व इंटरनेट के माध्यम से और ऑडियो-वीडियो सीडी व डीवीडी के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाना एक ऐसा भागीरथ कार्य है, अन्यत्र जिसका सानी मिलना असंभव ही है।

जरा कल्पना तो कीजिये कैसा लगता होगा उत्तुंग पर्वतराज की तलहटी में निर्मित विशाल व भव्य पाण्डाल में भरी दोपहरी में समागत समस्त हजारों आत्मार्थियों की उपस्थिति में लगभग 1000 कतारबद्ध इंद्र-इंद्राणियों द्वारा शांतवातावरण में इस गहन, गूढ और गंभीर, आत्मकल्याणकारी विधान में आह्लादित हृदय के साथ सहभागिता करना, वह भी अविराम 4-4 घंटे प्रतिदिन।

देश के चार-चार उत्कृष्टतम कोटि के विधानाचार्यों एवं उनके अनेकों सहयोगियों द्वारा मधुरकंठ से अर्थ सहित इस विधान का संयोजन सचमुच रोमांचित कर देने वाला अनुभव था।

एक अभूतपूर्व व ऐतिहासिक विधान वह था जो कि पण्डित टोडरमलजी ने किया था ''इन्द्रध्वज विधान'' आज से लगभग 250 वर्ष पूर्व तत्कालीन जयपुर नगर (रियासत) से बाहर मोतीडूंगरी की पहाड़ियों की तलहटी में, हजारों के जनसमूह के बीच, जिसकी चर्चा मात्र हमें आज भी रोमांचित कर देती है और एक अभूतपूर्व विधान आज हुआ है, श्री समयसार विधान तीर्थराज सम्मेदशिखर की पहाड़ियों की तलहटी में, डॉ. हुकमचंद भारिल्ल द्वारा हजारों आत्मार्थियों के बीच। दोनों ही विधानों का इतिहास में दूसरा कोई सानी नहीं।

इस आयोजन की एक और विशेषता यह रही कि चाहे वह विधान और उसके दौरान बोले जाने वाले भक्तिगीत हों या सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति और अन्य कार्यक्रमों के दौरान बोले जाने वाले भजन, पर कर्तावाद और भिक्षावृत्ति को कहीं कोई स्थान नहीं था और तो और जगत के भोग तो दूर, मोक्ष की भीख मांगना भी वर्जित रहा।

एक बात और, यह कार्यक्रम मानो विद्वानों के द्वारा, विद्वानों के लिये ही था, आयोजक भी विद्वान, व्यवस्थापक भी विद्वान और लाभार्थी भी विद्वान ही। इतिहास में जैन विद्वानों का इतना बड़ा समूह शायद ही कभी कहीं एक ही स्थान पर एकत्र हुआ हो।

इसमें कोई संदेह नहीं कि ये दोनों ही विधान सहस्रों वर्षों तक इतिहास में अमर रहेंगे। इन दिनों सम्मेदशिखर की छटा ही और थी, विशाल जनसमूह; पर कहीं कोई अफरातफरी नहीं, कोई कोलाहल नहीं, कोई भागदौड़ और छीनाझपटी नहीं; बस मात्र शांतरस का परिपाक और कुछ भी नहीं।

प्रात: 5 बजे से रात्रि 10 बजे तक लगातार उच्चकोटि के कार्यक्रम; पर सहभागियों के मध्य हर समय वही उत्साह, वही ताजगी।

विविधतापूर्ण कार्यक्रम- श्री कमलचंदजी पिड़ावा वालों की प्रौढ कक्षा, पू.गुरुदेवश्री व डॉ. भारिल्ल के टीवी प्रवचन, पू. गुरुदेवश्री के सीडी प्रवचन, जिनेन्द्र पूजन, विशिष्ट विद्वत् प्रवचन, डॉ. भारिल्ल के लाइव प्रवचन, डॉ. शुद्धात्मप्रभा एवं आराध्य टडैया (शास्त्री) द्वारा बाल कक्षाएं, पं. अभयजी शास्त्री, पं.शांतिकुमारजी पाटील, डॉ.संजीवजी गोधा एवं पं.संजयजी जेवर एवं उन सभी के अनेकों वरिष्ठ सहयोगियों सर्वश्री राजकुमारजी शास्त्री, ऋषभजी शास्त्री, अजितजी शास्त्री, धर्मेन्द्रजी शास्त्री, मनीषजी शास्त्री, विवेकजी शास्त्री, सुबोधजी

शास्त्री एवं ब्र. सर्वश्री श्रेणिकजी, नन्हे भैया एवं मनोजजी आदि के संयोजन में श्री समयसार विधान, जिनेन्द्र भक्ति फिर विभिन्न विशिष्ट विद्वत् प्रवचन, विविध अधिवेशन, ब्र.सुमतप्रकाशजी के प्रवचन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम।

ये कहिये कि क्या नहीं था वहाँ ?

देशभर से पधारे सैंकड़ों स्नातक परिषद् के सदस्य शास्त्री विद्वानों के अधिवेशन, अ.भा. जैन युवा फैडरेशन के अधिवेशन एवं अ.भा.दि.जैन विद्वत् परिषद के अधिवेशन ने सम्पूर्ण आयोजन को ऊँचाईयाँ प्रदान कीं।

टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की नीतियों, कार्यक्रमों, उपलब्धियों और कार्यक्षेत्र के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करने वाली मुक्ति जैन द्वारा निर्देशित नवनिर्मित संक्षिप्त डॉक्यूमेन्ट्री हो या महाविद्यालय के वर्तमान विद्यार्थियों द्वारा मंचित एवं श्री सर्वज्ञ भारिल्ल द्वारा संयोजित नाटक 'टोडरमल से टोडरमल स्मारक तक' एवं डॉ. हुकमचंद भारिल्ल द्वारा रचित महाकाव्य वैराग्य के आधार पर श्रीमती अध्यात्मप्रभा जैन द्वारा नाट्य रूपांतरित व मुम्बई के सुप्रसिद्ध नाटक कलाकारों द्वारा मंचित 'वैराग्य' नाटक का मंचन हो या जयपुर निवासी देश के लोकप्रिय गायक श्री गौरव सोगानी और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती दीपशिखा की आध्यात्मिक भजन संध्या हो, सभी कार्यक्रमों ने उपस्थित जनसमूह को मन्त्रमुग्ध कर दिया। श्री गौरव सौगानी द्वारा श्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल द्वारा रचित स्वर्णजयन्ती गीत –''लो स्वर्ण जयन्ती वर्ष आ गया...'' गाये जाने पर तो सम्पूर्ण सभा मंडप झूम-झूमकर स्वर में स्वर मिलाने लगा।

7 भोजनालयों में प्रतिदिन 10 से 11 हजार व्यक्तियों का दोनों समय का भोजन और प्रातःकालीन नाशता बिना किसी आपाधापी, छीनाझपटी और भागदौड़ के शांतिपूर्वक मात्र 1 से 1.15 घंटे में सम्पन्न हो जाना आयोजनकर्ताओं व व्यवस्थापकों (पंडित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, सम्पूर्ण कलकत्ता मंडल एवं महाविद्यालय के विद्यार्थीगण) के कार्यकौशल का जीवंत प्रमाण था।

सम्पूर्ण आयोजन में श्री कुन्दकुन्द कहान तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट व विशेष तौर पर उसके मंत्री श्री महीपालजी ज्ञायक का सहयोग उल्लेखनीय रहा। एक ओर सम्पूर्ण आयोजन के दौरान पंडित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदिका एवं समस्त ट्रस्टीगण स्वयं भी उपस्थित रहकर दिनरात कर्मठतापूर्वक व्यवस्थाओं में संलग्न रहे तो दूसरी ओर ट्रस्ट के मैनेजर श्री पीयूष शास्त्री के नेतृत्व में ट्रस्ट का सम्पूर्ण कार्यालय भी दिनरात इसे सफल बनाने में जुटा रहा।

सम्मेदशिखरजी सिद्धक्षेत्र के समस्त 28 महत्वपूर्ण ठिकानों में ठहरे हुए 11 हजार लोग जाने किस मिट्टी के बने थे, कभी कोई शिकवा या शिकायत नहीं, किसी प्रकार की असुविधा संबंधी असंतोष नहीं, यदि था तो मात्र कृतज्ञता का भाव बस। सभी लोग एक ही गुरुमंत्र से प्रेरित व संचालित थे ''पहिले आप''।

इस आयोजन की सबसे बड़ी विशेषता थी इसके आयोजन और व्यवस्थाओं में शास्त्री स्नातक विद्वानों व टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के 185 वर्तमान विद्यार्थियों की सम्पूर्ण सहभागिता। उनकी निष्ठा, समर्पण व श्रम अनुपम था। गत एक वर्ष की तैयारियों के साथ सम्पन्न यह विधान आगत शताब्दियों को एक नया लक्ष्य दे गया है। (क्रमशः)

अवश्य पधारिये महामुनिराज आचार्य कुन्दकुन्द देव की तपोभूमि पोन्नूर मलै में आयोजित तपोभूमि पोन्नूर

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

मंगलवार, 21 फरवरी से रविवार, 26 फरवरी 2017

विद्वत् सान्निध्य : पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली पण्डित श्री सुनील शास्त्री, राजकोट प्रो. डॉ. सुदीप कुमार जी दिल्ली

विशेष आकर्षण :- • आचार्य कुन्दकुन्द की तपो एवं विदेह गमन भूमि पोन्नूर एवं आसपास के अनेक प्राचीन जिनमंदिरों के दर्शन
•सीमन्धर भगवान के मनोहारी दर्शन एवं पूजन विधान का मधर आयोजन प्राकृतिक एवं शांत वातावरण में जिनवाणी की अमृत देशना
• पूज्य गुरुदेवश्री के सीडी प्रवचन एवं उसके रहस्यों का लाभ • अन्य समागत विद्वानों का प्रासंगिक लाभ

संयोजक – विराग शास्त्री, जबलपुर मो. 9300642434, email: kahansandesh@gmail.com

कार्यक्रम स्थल : आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति सेन्टर, कुन्दकुन्द नगर, पोन्नूर मलै
तह. वन्देवासी, वडक्कमवाडी जि. तिरुवण्णामलै 604505

निवेदक : श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विले पारले मुम्बई

विशेष : इस शिविर में सहभागिता करने के इच्छुक साधर्मी संयोजक से सम्पर्क करें। स्थान सीमित होने से सीमित साधर्मियों को पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर प्रवेश दिया जायेगा। कार्यक्रम 21 फरवरी को दोपहर से प्रारम्भ होगा।

पोन्नूर चेन्नई से 180 किमी, बैंगलोर से 360 किमी, पाण्डिचेरी से 88 किमी, वन्दवासी से 8 किमी, चेटपुट से 20 किमी की दूरी पर स्थित है।
चेन्नई के कोयम्बडु बस स्टेण्ड से पोन्नूर के लिये सरकारी बस क्रमांक 104, 130, 148, 208, 422 उपलब्ध रहती हैं।

पोन्नूर आवागमन के सम्बन्ध में आप निम्न नम्बरों पर सम्पर्क करें –
पोन्नूरमलै – 04183-291136, 321520, मो. 09976975074 चेन्नई सम्पर्क – श्री दीपक कामदार : 09383370033

2 नवम्बर 2016, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

मोक्षमार्गप्रकाशक स्वाध्याय वर्ष

अध्ययन हेतु प्रश्नोत्तर

नोट :- पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट स्वर्ण जयंती महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत मोक्षमार्गप्रकाशक स्वाध्याय वर्ष का संचालन किया जा रहा है। इस क्रम में पाँचवें अध्याय के प्रश्नोत्तर प्रस्तुत हैं।

प्रश्न : गृहीत व अगृहीत मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

उत्तर : अनादि से जो मिथ्यात्वादि भाव पाये जाते हैं, उन्हें अगृहीत मिथ्यात्व कहते हैं तथा उनके पुष्ट करने के कारणों (मिथ्या देव-शास्त्र-गुरु आदि) से विशेष मिथ्यात्वादिक भाव होते हैं, उन्हें गृहीत मिथ्यात्व कहते हैं।

प्रश्न : गृहीत मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर : कुदेव-कुगुरु-कुधर्म और कल्पित तत्त्वों का श्रद्धान गृहीत मिथ्यादर्शन है। विपरीत निरूपण द्वारा जिनमें रागादि का पोषण किया गया हो ऐसे कुशास्त्रों का श्रद्धानपूर्वक अध्ययन मिथ्याज्ञान है। जिस आचरण में कषायों का सेवन हो और उसे धर्मरूप अंगीकार करे सो मिथ्या चारित्र है। (**नोट :-** पाँचवाँ अध्याय स्वयं पठन के लिये निर्धारित है, अत: उसके प्रश्नोत्तर यहाँ नहीं दिये जा रहे हैं)

प्रश्न : कुदेव किसे कहते हैं ?

उत्तर : जो हित के कर्ता नहीं हैं और उन्हें भ्रम से हित का कर्ता जानकर सेवन करे सो कुदेव है।

प्रश्न : कुदेव का सेवन जीव कितने प्रयोजनों से करता है ?

उत्तर : कुदेव का सेवन जीव तीन प्रयोजनों से करता है -

(1) इस लोक में सुख संबंधी प्रयोजन

(2) परलोक में सुख संबंधी प्रयोजन

(3) मोक्ष का प्रयोजन

प्रश्न : कुदेव सेवन से इन प्रयोजनों की पूर्ति होती है या नहीं ?

उत्तर : इस लोक/परलोक में सुख संबंधी प्रयोजन की पूर्ति पुण्योदय से होती है; परन्तु कुदेव सेवन में हिंसा-विषयादिक रूप पाप परिणाम का ही अधिकार है। इसलिये कुदेव सेवन से इसलोक/परलोक संबंधी प्रयोजन की पूर्ति नहीं होती तथा जो मोक्ष के प्रयोजन से कुदेव का सेवन करते हैं उनके स्वयं ही मोक्ष का ठिकाना नहीं है तो उनके भक्तों को मोक्षमार्ग की प्राप्ति कैसे होगी ?

प्रश्न : व्यंतरादिक को पूजने का निषेध क्यों कहते हो ?

उत्तर : यह जीव व्यंतरादिक के नाम पर जिनको पूजता है, उनमें अनेक तो कल्पनामात्र देव हैं तथा कितने ही व्यंतरादिक हैं जिनमें किसी का भला-बुरा करने की सामर्थ्य नहीं है; अत: उनको पूजना मिथ्या है।

प्रश्न : व्यंतर अपनी शक्ति से कदाचित् सुख-दुख का साधन करते देखे जाते हैं; अत: उनको मानने पूजने में क्या दोष है ?

उत्तर : (1) पुण्य-पाप के उदय के बिना जीव को सुख-दुख देने में व्यंतर समर्थ नहीं है, उल्टे उनके पूजना रागादि पाप की वृद्धि करने वाला होने से बुरा करने वाला ही है।

(2) व्यंतर जो भी करते हैं वे कौतूहल से करते हैं, अपने में उनके कौतूहल का स्थान होने पर दुख होगा इसलिये भी उनको मानना-पूजना योग्य नहीं।

प्रश्न : क्षेत्रपाल पद्मावती आदि को जिनमत के अनुसारी देव हैं, उनको पूजन में क्या दोष है ?

उत्तर : जिनमत में संयम धारण करने पर पूज्यपना होता है और देवों में संयम होता ही नहीं तथा यदि सम्यक्त्वी मानकर पूजते हो तो भवनत्रिक में उसकी भी मुख्यता नहीं है तथा यदि कहोगे कि जिसप्रकार राजा के प्रतिहारादिक हैं, उसी प्रकार ये तीर्थंकर के हैं सो यह झूठी मान्यता है क्योंकि समवशरण में इनका अधिकार नहीं है।

प्रश्न : कुदेवों को मानना कार्यकारी नहीं है तो न हो उनके मानने में कुछ बिगाड़ भी तो नहीं होता ?

उत्तर : यदि बिगाड़ न हो तो हम क्यों निषेध करें। एक तो मिथ्यात्व दृढ होने से मोक्षमार्ग दुर्लभ हो जाता है, यह बड़ा बिगाड़ है और दूसरे पाप बंध होने से आगामी भव में दु:ख पाते हैं, यह बड़ा बिगाड़ है।

प्रश्न : कुगुरु किसे कहते हैं ?

उत्तर : जो तीव विषय कषायादि अधर्मरूप परिणमित होते हैं और मानादिक से अपने को धर्मात्मा मानते हैं; धर्मात्मा के योग्य नमस्कारादिक क्रिया कराते हैं। इसप्रकार धर्म का आश्रय करके अपने को बड़ा मनवाते हैं वे सब कुगुरु जानना।

- संयोजक, पीयूष शास्त्री

प्रकाशन तिथि : 28 अक्टूबर 2016

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com